आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 2 April 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – "आज अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य निर्माण करने का पुरुषार्थ करे"

संगमयुग पर हम अपना **इक्कीस जन्मों का भाग्य निर्माण कर रहे है।** भाग्य की कलम हमारे हाथ में है। हम अपना जैसा भाग्य चाहे लिख ले।

बाबा ने कर्मों की गुह्य गति, बड़ी रहस्यमयी गति हम सबको समझाई है।

विचार कर ले हम अपने लौकिक कार्य के लिए, थोड़ा सा धन कमाने के लिए एक जीवन में, अपना जीवन यापन करने के लिए आठ-दस घन्टे रोज मेहनत करते है।

और इक्कीस जन्मों का सर्वश्रेष्ठ भाग्य पाने के लिए केवल एक घन्टा। कितनी बड़ी भूल है।

हमें जानना चाहिए, ऐसा भाग्य मिल रहा है कि इक्कीस जन्मों तक कुछ भी कमाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। प्रारब्ध ही प्रारब्ध होगी।

तो गुह्य गति की चर्चा बाबा ने इसतरह की है, जो अपने समय को सफल करेंगे वो लम्बा काल राज्य भाग्य प्राप्त करेंगे। कितनी बड़ी बात है, संगमयुग के समय के महत्व को जानना।

कलयुगी मनुष्यों की समय के महत्व अलग है। उनके लिए भी समय इम्परटैन्ट है। किसी भी मनुष्य के लिए समय बहुत इम्परटैन्ट पहलु होता है।

परन्तु हम सबके लिए समय बहुत अनमोल खजाना होता है। एक एक सेकण्ड में हम बहुत लम्बी चौड़ी कमाई कर सकते है।

कितना बड़ा राज़ बताया, जो अपने एक एक सेकण्ड को इस ईश्वरीय कार्य में, योगयुक्त अवस्था में, ज्ञान की चिंतन में व्यतीत करते है उन्हें सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होगा।

लम्बा काल राज्य अर्थात कई जन्म उनके सिर पर ताज आ जायेगा।

दूसरी गुह्य गति सुन ले। जिन्होंने अपने श्वांसों को सफल किया, श्वांस श्वांस याद में बिताये, श्वांस श्वांस दुसरों को सुख देने में बिताये, उनका कभी श्वांस बंद नहीं होगा।

चारों युगों की गैरान्टी हो जायेगी, उन्हें कभी हर्ट एटक नहीं होगा। वह सदा स्वस्थ रहेंगे। श्वांसों का बड़ा गहरा नाता है। हमारे स्वस्थ से तो हम एक एक श्वास को पूरी तरह सफल कर ले यही हमारी बुद्धिमानी है।

ज्ञान की अनमोल खजाने को जो लोग सफल करेंगे अर्थात ज्ञान को यूज़ करेंगे। ज्ञान मिला है हमें, उसकी सफलता है कि हम ज्ञान सबको दे।

हम ज्ञान को वैल्यू दे। हम ज्ञान को बांटते रहे। हम ज्ञान के द्वारा दुसरे को अच्छी गाइडेंस दे। हम ज्ञान के द्वारा दुसरों के समस्याओं का समाधान करे।

ऐसा करने वालों को किसी भी जन्म में बुद्धि की कमी नहीं रहेगी। और जब वो राजा होंगे तब उन्हें वज़ीरों की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। वो स्वयं ही सबसे अधिक बुद्धिमान होंगे।

और जिसने अपने स्थूल धन को सफल किया होगा वो धन-धान से भरपूर रहे होंगे। और जो अपने धन को खाने-पीने में, व्यर्थ में, दुनियावी शौक पूर्ण करने में लगा दिया होगा उनको धन का अभाव रहेगा।

भले ही सतयुग त्रेता में अथाह धन-सम्पदा है, पर तुलना में उनके पास बहुत कम रहेगी।

तो आईये हम अपनी सभी खजाने को सफल करे। शक्तियों को सफल करेंगे तो सदा शक्तिशाली होकर रहेंगे। उनके राज्य में किसी भी शक्ति की कमी नहीं होगी।

प्रकृति भी समय पर सबकुछ करेगी। मर्यादाओं के अनुकूल काम करेगी।

तो हम सभी इस बात पर बहुत ज्यादा ध्यान दे। के हम अपने सभी खजाने को पूरी तरह सफल करे।

तो आज सारा दिन ... हम अपने इन स्वरूपों का अभ्यास करेंगे। अपने भाग्य को सामने देखेंगे।

हमारा देव स्वरुप .. " **जिसमें हम बहुत बहुत भाग्यवान है** "

हमारा पुज्य स्वरुप .. " **जिसमें हमारा जड़ मूर्तियाँ भी दाता है** "

हमारा फरिश्ता स्वरुप .. " **जिसके द्वारा हम विश्व का कल्याण करेंगे** "

तो इन स्वरूपों को हर घन्टे में एकबार बहुत अच्छी तरह स्मृति में लायेंगे। इससे व्यर्थ पूरी तरह समाप्त हो जायेगा।

।। ओम शान्ति ।।